बच्चा के अनुशासित करय के महत्व आ माता-पिता के सम्मान करय के महत्व

बच्चा के ओहि बाट पर प्रशिक्षित करू जे ओ जेबाक चाही, आ जखन ओ बूढ़ भ’ जायत तखन ओ ओहि बाट सँ नहि हटत। नीतिवचन 22:6

माता-पिता के लिये

देखू, संतान प्रभुक धरोहर अछि, आ गर्भक फल हुनकर इनाम अछि। भजन 127:3

जे अपन लाठी छोड़ैत अछि, से अपन बेटा सँ घृणा करैत अछि, मुदा जे ओकरा सँ प्रेम करैत अछि, से ओकरा बेर-बेर दंडित करैत अछि। नीतिवचन 13:24

प्रभुक भय मे दृढ़ विश्वास अछि, आ ओकर बच्चा सभ केँ शरण भेटत। नीतिवचन 14:26

जखन आशा रहैत अछि ताबत धरि अपन पुत्र केँ ताड़ि दियौक, आ ओकर कानब केँ अपन प्राण नहि छोड़ि दियौक। नीतिवचन 19:18

मूर्खता बच्चाक हृदय मे बान्हल रहैत छैक; मुदा सुधारक छड़ी ओकरा ओकरासँ दूर भगा देतैक। नीतिवचन 22:15

बच्चा सँ सुधार नहि रोकू, किएक तँ जँ अहाँ ओकरा लाठी सँ मारि देब तँ ओ नहि मरत। अहाँ ओकरा छड़ी सँ मारि देब आ ओकर प्राण केँ नरक सँ मुक्त करब। नीतिवचन 23:13-14

छड़ी आ डाँट बुद्धि दैत अछि, मुदा जे बच्चा अपना लेल छोड़ि देल गेल अछि, से अपन माय केँ लज्जित क’ दैत अछि। नीतिवचन 29:15

अपन बेटा केँ सुधारू, ओ अहाँ केँ विश्राम देत। हँ, ओ अहाँक प्राण केँ आनन्द देत। नीतिवचन 29:17

तोहर सभ बच्चा सभ केँ परमेश् वरक शिक्षा देल जायत। तोहर सन्तान सभक शान्ति बहुत पैघ होयत।” यशायाह 54:13

जे अपन बेटा सँ प्रेम करैत अछि, से ओकरा बेर-बेर लाठीक अनुभूति कराबैत अछि, जाहि सँ अंत मे ओकरा पर आनन्द भेटय। जे अपन पुत्र केँ दंडित करत से ओकरा पर आनन्दित होयत आ अपन परिचित मे ओकरा पर आनन्दित होयत। जे अपन बेटा केँ सिखाबैत अछि, ओ शत्रु केँ दुखी करैत अछि, आ अपन मित्रक समक्ष ओकरा पर आनन्दित होयत। ओकर पिता भले मरि जाय, मुदा ओ एना अछि जेना ओ मरल नहि हो, किएक तँ ओ अपना सदृश एकटा केँ छोड़ि गेल अछि। जीबैत काल ओ देखि कऽ हुनका पर आनन्दित भऽ गेलाह। ओ अपन शत्रु सभक प्रतिशोध लेनिहार छोड़ि गेलाह, आ एहन जे अपन मित्र सभक प्रति दयालुताक बदला लेत। जे अपन बेटाक बेसी काज करत से ओकर घाव बान्हि देत। आ हर चीत्कार पर ओकर आंत परेशान भ’ जायत। घोड़ा जे घोड़ा नहि टूटल अछि से माथक बलदार भ' जाइत अछि, आ जे बच्चा अपना लेल छोड़ि देल गेल अछि, से जानि-बुझि क' भ' जायत। अपन बच्चा केँ लूटब, ओ अहाँ केँ डरा देत, ओकरा संग खेलाइत, ओ अहाँ केँ भारी पड़ि देत। ओकरा संग हँसी नहि, कहीं ओकरा संग दुख नहि हो, आ अंत मे दाँत नहि कटयब। जवानी मे ओकरा कोनो स्वतंत्रता नहि दियौक, आ ओकर मूर्खता पर आँखि नहि मिचाउ। छोट रहैत ओकर गरदनि झुका दियौक आ बच्चा मे कात मे मारि दियौक, जाहि सँ ओ जिद्द नहि भ' जाय आ अहाँक आज्ञा नहि मानय आ एहि तरहेँ अहाँक हृदय मे दुःख नहि आबि जाय। अपन बेटा केँ ताड़ि दियौक आ ओकरा श्रम मे राखि दियौक, जाहि सँ ओकर अश्लील व्यवहार अहाँक लेल अपराध नहि बनि जाय।” सिराक ३०:१-१३

बच्चों के लिये

अपन पिता आ मायक आदर करू, जाहि सँ अहाँक परमेश् वर जे देश अहाँ केँ दैत छथि, ताहि मे अहाँक दिन लंबा रहय।” निष्कासन 20:12

हमर बेटा, प्रभुक दंड केँ तिरस्कार नहि करू। आ ने ओकर सुधार सँ थाकि जाउ। जेना पिता ओ पुत्र जकरा मे ओ प्रसन्न होइत अछि। नीतिवचन 3:11-12

सुलेमान के लोकोक्ति। बुद्धिमान बेटा बाप केँ प्रसन्न करैत अछि, मुदा मूर्ख बेटा अपन मायक भार होइत छैक। नीतिवचन 10:1

अपन पिताक बात सुनू जे अहाँ केँ जन्म देलनि, आ जखन अपन माय केँ बूढ़ भेला पर तिरस्कार नहि करू। नीतिवचन 23:22

बच्चा सभ, प्रभु मे अपन माता-पिताक आज्ञा मानू, किएक तँ ई उचित अछि। अपन बाप-माँक आदर करू। जे प्रतिज्ञाक संग पहिल आज्ञा अछि। जाहि सँ तोहर नीक होअय आ तोँ पृथ् वी पर बेसी दिन जीबैत रहू। इफिसियों 6:1-3

अपन पिताक मन सँ आदर करू, आ मायक दुःख नहि बिसरब। मोन राखू जे अहाँ हुनका सभ सँ जन्मल छी। आ जे काज ओ सभ अहाँक लेल केने छथि, तकरा अहाँ हुनका सभ केँ कोना प्रतिफल दऽ सकैत छी? सिराक 7:27-28

हे बच्चा सभ, अपन पिताक बात सुनू, आ तकर बाद करू, जाहि सँ अहाँ सभ सुरक्षित रहब। किएक तँ परमेश् वर पिता केँ सन् तान सभ पर आदर देलनि आ पुत्र सभ पर मायक अधिकार केँ पुष्ट कयलनि। जे केओ अपन पिताक आदर करैत अछि, ओ अपन पापक प्रायश्चित करैत अछि। जे केओ अपन पिताक आदर करत, ओकरा अपन संतान सँ आनन्दित होयत। जखन ओ अपन प्रार्थना करत तखन ओकर बात सुनल जायत।" जे अपन पिताक आदर करैत अछि, ओकर जीवन दीर्घ होयत। जे प्रभुक आज्ञाकारी होयत से अपन मायक लेल सान्त्वना देत। जे प्रभु सँ डरैत अछि, से अपन पिताक आदर करत, आ अपन मालिकक समान अपन माता-पिताक सेवा करत। अपन बाप-माँ केँ बात आ काज दुनू मे आदर करू, जाहि सँ अहाँ केँ हुनका सँ आशीर्वाद भेटय। कारण, पिताक आशीर्वाद संतानक घर-परिवार केँ स्थापित करैत अछि। मुदा मायक अभिशाप नींव केँ जड़ि सँ उखाड़ि दैत अछि। अपन पिताक अपमान मे महिमा नहि करू। किएक तँ अहाँक पिताक अपमान अहाँक लेल कोनो महिमा नहि अछि। मनुखक महिमा ओकर पिताक आदर सँ होइत छैक। आ अपमानित माय बच्चा सभक लेल निन्दा होइत अछि। हमर बेटा, अपन पिताक उम्र मे सहायता करू, आ जा धरि ओ जीबैत छथि ता धरि हुनका दुखी नहि करू। आ जँ ओकर समझ मे कमी आबि गेलैक तँ ओकरा संग धैर्य राखू। जखन अहाँ अपन पूर्ण सामर्थ्य मे रहब तखन ओकरा तिरस्कार नहि करू। कारण, तोहर पिताक निश्चिंतता बिसरल नहि जायत, आ पापक बदला मे ई अहाँ केँ मजबूत करबाक लेल जोड़ल जायत। तोहर क्लेशक दिन ई स्मरण कयल जायत। तोहर पाप सेहो पिघलि जायत, जेना नीक गरम मौसम मे बर्फ पिघलि जायत। जे अपन पिता केँ छोड़ि दैत अछि से निन्दा करयवला जकाँ अछि। जे अपन माय केँ क्रोधित करैत अछि, से परमेश् वरक शापित अछि। सिराक 3:1-16

जँ हम सभ अपन बच्चा सभकेँ अनुशासित करब तँ ओ सभ एखन कानत मुदा भविष्यमे मजा आओत। जँ हम सभ अपन बच्चा सभकेँ अनुशासित नहि करब तँ आब मजा आओत मुदा भविष्यमे कानत।

बच्चा सब हमर देश के भविष्य अछि। मुदा जँ अनुशासनक बिना बूढ़ भ' जेताह त' हमरा सभक देशक भविष्य की हेतैक?

वयस्क केरऽ सब खराब आदत वू होय छै जेकरा सुधार या अनुशासित नै करलऽ गेलऽ छेलै जबं ओकरा खाली बच्चा छेलै । हमरा सभ केँ एहन बच्चा सभक पालन-पोषण करय पड़त जे परमेश् वर सँ डरय, प्रेम करय आ आज्ञा मानय।

हम एकटा जीबैत माटिक टुकड़ी लऽ लेलहुँ।
आ दिन-प्रतिदिन धीरे-धीरे बनबैत रहल।
हम फेर आबि गेलहुँ जखन साल बीति गेल।
ई एकटा एहन आदमी छल जकरा हम देखलहुँ।
ओ एखनो ओहि शुरुआती छाप पहिरने छल।
आ हम ओकरा आब कहियो नहि बदलि सकलहुँ।